तत्त्वार्थ सूत्र व्रत विधि

तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ जिसका दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है, इसमें दश अध्याय हैं। दिगम्बर जैन परम्परा में संस्कृत भाषा में पहला सूत्रग्रंथ है। एक-एक अध्याय की प्रतिमा या श्रुतस्कंध यंत्र का भी अभिषेक करके तत्वार्थ सूत्र की पूजा करें।

समुच्चय जाप मंत्र– ॐ ह्रीं दशाध्याय सहित तत्त्वार्थसूत्र महाशास्त्रेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र-

१. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रप्रथमाध्यायस्य सम्यग्दर्शनादिपंचदशसूत्रेभ्यो नमः।
२. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रद्वितीयाध्यायस्य जीवस्यआदिद्वादशसूत्रेभ्यो नमः।
३. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रतृतीयाध्यायस्य रत्नप्रभादिअष्टादश-सूत्रेभ्यो नमः।
४. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रचतुर्थाध्यायस्य दशाष्ठ आदि षट् सूत्रेभ्यो नमः।
५. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रपंचमाध्यायस्य पंचास्तिकायादि एकादश-सूत्रेभ्यो नमः।
६. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रषष्ठाध्यायस्य कायवाङ्मनः त्रिकर्णादि चतुर्दश सूत्रेभ्यो नमः।
७. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रसप्तमाध्यायस्य हिंसादिएकोन-चत्वारिंशत् सूत्रेभ्यो नमः।
८. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्राष्टमाध्यायस्य मिथ्यादर्शनाविरत्यादि-अष्टसूत्रेभ्यो नमः।
९. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रनवमाध्यायस्य गुप्त्यादि सप्त सूत्रेभ्यो नमः।
१०. ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रदशमाध्यायस्य मोहक्षयादि पंचसूत्रेभ्यो नमः।

इस व्रत को पूर्ण कर उद्यापन में **परम पूज्य आचार्य श्री १०८ विशदसागर** जी द्वारा रचित यह **'तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान'** करके तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ या विधान छपाकर ज्ञानदान में चतुर्विध संघ को प्रदान करें। दश-दश उपकरणादि मंदिर जी में भेंट देवें। यथाशक्ति व्रत पूर्ण करें। दशलक्षण पर्व में यह विधान अवश्य करें यह विधान आपके जीवन में कर्म निर्जरा का कारण बने। इसी भावना के साथ पुनश्च गुरुदेव श्री विशदसागर जी महाराज के चरणों में नमोऽस्तु-३

मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

●

तत्त्वार्थ सूत्र की कथा

तत्त्वार्थ सूत्र की रचना के विषय में मनोरंजक तथ्य है। कहा गया है कि ऊर्जयन्त गिरि के निकट गिरनार नाम के पत्तन में आसन्न भव्य 'सिद्धस्य' नाम का एक मुमुक्षु श्रावक था। उसने 'दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः' सूत्र बनाया और कार्यवश बाहर चला गया और सूत्र एक पटिये पर लिख छोड़ा। इस श्रावक के घर पर मुनि आये। श्रावक की माता व गृहणी ने पड़गाहन कर आहार दिया। मुनि जब वन को जाने लगे तो उनकी दृष्टि पटिये पर लिखे हुए सूत्र पर पड़ी। कुछ सोचकर उसके आदि में उसने 'सम्यक्' पद और जोड़ दिया। इसलिये कि दर्शनज्ञान चारित्र मिथ्या भी होते हैं, वे मोक्ष के मार्ग नहीं संसार के मार्ग होते हैं, इसलिए संदिग्ध पद को सुधार देना उचित है–ऐसा सोचकर सूत्र के पहिले 'सम्यक्' लिख दिया और मुनि तपोवन में चले गये। श्रावक जब घर आया और उसने उस सूत्र में 'सम्यक्' शब्द जुड़ा देखा तब प्रसन्न होकर अपनी माता से पूछा कि किन महानुभाव ने यह शब्द जोड़ा है? माता ने उत्तर दिया कि एक निर्ग्रन्थाचार्य ने यह शब्द जोड़ा है और वह शीघ्रता से खोज करता हुआ मुनिराज के पास पहुँच जाता है और चरणों में नम्रीभूत हो महाराज से ग्रंथ का निर्माण करने की प्रार्थना करता हुआ पूछने लगा कि आत्मा का हित क्या है? मुनिराज ने कहा 'मोक्ष' है। इस पर मोक्ष का स्वरूप और उसकी प्राप्ति का उपाय पूछा गया। जिसके उत्तर रूप में ही इस ग्रंथ का अवतार हुआ है इसी से इस ग्रंथ का अपर नाम 'मोक्षशास्त्र' है। इस प्रकार 'सिद्धय्य' नामक उपासक के लिये आचार्य उमास्वामी महाराज की यह शास्त्र रचना महान वात्सल्यभाव की द्योतक है।

इस ग्रन्थ में आचार्य उमास्वामी ने पथ भ्रान्त संसारी पुरुषों को मोक्ष का सच्चा मार्ग बतलाया है–'सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः' अर्थात् सम्यग्दर्शन (आत्मदर्शन) सम्यग्ज्ञान (आत्मज्ञान) सम्यग्चारित्र (आत्मरमण) इन तीनों की एकता ही मोक्ष मार्ग है। इन्हीं तीनों का विशद विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है।

परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी लेखनी से ''लघु तत्त्वार्थ सूत्र'' की रचना की जो सुन्दर और सरल शब्दों से भरा हुआ है जो एकबार करता है दो बार करने का भाव करता है। ऐसे गुरुदेव के श्री चरणों में मनोस्तु आप हम पर बड़े उपकार कर रहे हैं। हे गुरुदेव आप चिरायु हों स्वस्थ्य रहें ऐसी भावना है।

ब्र. सपना दीदी

●

तत्त्वार्थ सूत्र (सूत्राष्टक) पूजा

स्थापना

जयत् - यखिल वांगमार्ग, गामिन्य सूत्रयोऽ-र्हताम्।
धूतान्ध कमसा दिप्त्या (दिप्रा), यास्त्वषोंऽसु-मताविव।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत तत्त्वार्थं सूत्र ग्रन्थ समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वंशस्थ छंद)

उदधि क्षीर सुनीर सुनिर्मलैः, कलश कंचन पूरित शीतलैः।
परम पावन श्री युत पूजनै, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये जलं निर्व. स्वाहा ।

मलय चन्दन गंध सुकुकुंमैर्, विमल श्री घनसार विमिश्रितै।
सुपथ मोक्ष प्रकाशन चर्चितैः, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।२।।

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये चन्दनं निर्व. स्वाहा ।

धवल- मक्षित पोति-रखण्डतैः, चतुर पुंज अनूपम मण्डितैः।
विविध बीज- मुपार्जित पुण्यजैः, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।३।।

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये अक्षतं निर्व. स्वाहा ।

कमल कुन्द गुलाब सुचम्पकैः, ललित केलि चॅवेलि सुगंधजै।
प्रचुर पुष्पित कुष्म मनोहरै, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।४।।

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये पुष्पं निर्व. स्वाहा ।

मधुर आमिल तिक्त सुव्यंजनैः, वटक घेवर खज्जक मोदकैः।
कतक भाजन पूरित निर्मितैः, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे।।५।।

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये नैवेद्यं निर्व. स्वाहा ।

विमल ज्योति प्रकाशन दीपकैः, घृत कर्पूर घन सार महोज्ज्वलैः।
रव-मुदार सुवाद्यत नृत्यकैः, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।६।।
ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये दीपं निर्व. स्वाहा ।
अगर चन्दन धूप सुगंधजैः, दहन कर्मद वाणल सेवितैः।
अति सुगंधित वास महोत्त्वमैर्, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।७।।
ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये धूपं निर्व. स्वाहा ।
फड़स दाड़िम आम्र सुश्रीफलैः, कदलि नारंग सुनिम्बुज द्राक्षजैः।
हरित मिष्ट फलादिक संयुतैः, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।८।।
ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये फलं निर्व. स्वाहा ।
उदक चंदन अक्षत पुष्पकैः, सुचरु दीप सुधूप फल द्युतिः।
''विशद'' ज्ञान प्रदायक मंगलैः, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।९।।
ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

अर्घावली (अनुष्टुप छन्द)

सम्यक्त्व मूलतोज्ञेयं, सम्यग्ज्ञान प्रदायकं।
प्रमाण नय निक्षेपं, सर्व ज्ञान सम्पूजयेत।।१।।
ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत प्रथमोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जीवे लक्षणं प्रोक्तं वर्णनीया मुनीश्वरै।
द्वितीयोध्यायं पूजयेत्, विशद ज्ञान हेतवे।।२।।
ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत द्वितीयोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
शुद्ध द्रव्याष्ट नीराद्यै, निर्मितै अर्घ्य मुख्यताः।
पूजयेत् तृतियोऽध्याय, त्रियोगे विशदं परं।।३।।
ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत तृतियोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
नीराद्यष्ट द्रव्यै श्रेष्ठं, अर्घ्यं तु याः कृतं मया।
सम्पूजये मोक्ष शास्त्रं, पठ्यते चतुर्थोध्याय।।४।।
ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत चतुर्थोध्यायः नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नीराधैष्ट द्रव्य युक्तं, अर्घ्यं तु निर्मितं मया।
मोक्ष शास्त्र पंचमोध्याय, संपूजयेत् त्रियोगतः।।५।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत पंचमोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

धर्म ध्यान प्रदां शास्त्रं, यशोबुद्धि समवर्धनम्।
जल चन्दन पुष्पोधैर् ददाम्यर्घ्यं षष्ठोध्याय।।६।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत षष्ठोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शास्त्रेण परमं भक्तिं, संसारांबुध तारकं।
पूजयामि महाभक्त्या, मिथ्यान्ध्यकार नाशिनीम्।।७।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत सप्तमोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सम्यज्ञान प्रदां लोके, धर्म शर्मानु- बन्धनीं।
चर्चये मुख्याष्ट द्रव्यै, मोक्ष शास्त्र जिनागमे।।८।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत अष्टमोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान प्रदातारं, भ्रातारं भव वारिधौ।
जिन श्रुति महा भक्त्या, पूजयेत् शिव हेतवे।।९।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत नवमोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मोक्ष मार्ग प्रदां सारां, जैन मार्ग प्रभावनां।
पूजयेत् दशमोध्याय, भाव पूर्णे नित्यशः।।१०।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत दशमोध्याय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तोय चंदन पुष्पोघ्यैः, प्रसूनैश्-चाक्षतै शुभैः।
चरु दीपैश्च धूपैश्च-तां यजे वर श्रीफलैः।।११।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत परम श्रुत तत्त्वार्थसूत्र नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

त्रैलोक्ये वरदां शुद्धां, जरामद्य विनाशिनीं।
पूजां ते प्रददाम्युत्वै, शांति धारा त्रयात्मिकां।।१२।।

इति शांति धारा।

अथ जयमाला

विमल विमल वाणी, देव देवेन्द्र मानी।
हरषि-हरषि गानी, भव्य जीवेन प्राणी।।

कुरु कुरु श्रुत पाठं, तत्त्व तत्त्वार्थ सूत्रं।
भविजन हितकारीं, श्री जैनेन्द्र वाणी।।

तोटक (छन्द)

घन मोह महातम विश्व हरं, तस नाशन भान प्रकाश करं।
तिरलोक उद्योतित दीप लहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।१।।
करुणा जल पूरित मान सरं, दश धर्म विभूषित हंस वरं।
कल्पद्रुम वृक्ष समान-रहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।२।।
रत्नत्रय पुष्पित पद्म दलं, शुभ दर्शन ज्ञान-चरित्र नलं।
गुण तत्त्व पदारथ पत्र वहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।३।।
वसु कर्म महारिपु दुष्ट घनं, तसु प्रकृति घनाघन वेलिवनं।
तसु वेदन भेदन ठारक रहे, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।४।।
रिपु क्रोध कषाए निवार करं, समता समता सब जीव परं।
भव सागर तारण, पोत वहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।५।।
विधि सोडषकारण भाव धरं, षट् काय सुरक्षण ज्ञान वरं।
मद अष्ट विमर्दन मानसऽहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।६।।
सुनिरूपम वस्तु विकासपदं, जिन ध्यान परायण योग पदं।
जड़ चेतनि भाव विभिन्न लहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं।।७।।
घन करन पयोद समीर मलं, सूतरीकृत शोक पयोधि जलं।
भव सोषक लायक मोक्ष कहं, प्रणमामि सदा जिन सूत्र-महं ।।८।।

(छन्द घत्ता)

इति जिनमत सूत्रे, तत्त्व तत्त्वार्थ सारैः, विविध पुष्पं, शुभ पिच्छोपलक्षं।
प्रगटित दशाध्यायं, श्रीप्रभाचन्द्र सूरि विरचित जयमाला ज्ञान ध्यान पयोधि।।

ॐ ह्रीं श्री तत्वार्थ सूत्रे दशाध्याये जयमाला अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

(छन्द)

अनुपम सुखसाता भव्य जीवेन त्राता, मुनिजन सुर जेता, ध्यान ध्यायंति तेता
स जयतु सूत्रेऽहं मोक्षमार्गस्य भानुः, 'विशदं' तत्त्व ज्ञानं कर्म शत्रु विजेता।।

लघु तत्त्वार्थ सूत्र पूजन

स्थापना

प्रभाचन्द्र आचार्य प्रवर जी, तत्त्वार्थ सूत्र के रचनाकार।
अति संक्षेप कथन करके जो, किए जगत जन का उपकार।।
ग्रन्थ-ग्रन्थकर्ता की अर्चा, करते हैं हम महति महान।
विशद हृदय के सिहासन पर, करते हम अतिशय आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

मुनि मन सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरें।
जिन गुरु के चरणों धार, दे जग द्वन्द हरें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

अनुपम सुरभित ले गंध पावन पात्र भरें।
श्री जिन के चरणों चर्च भव संताप हरें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, संसार ताप विनाशनाय जन्दनं निर्व० स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल श्वेत, अक्षत थाल भरें।
श्री जिन पद पूजें आज, अक्षय सौख्य करें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

सुरभित मनमोहक श्वेत, कुन्द गुलाब लिए।
हो मदन पराजय नाथ!, पूजें हर्ष हिए।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, कामवाण विध्वंशमाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

यह सरस शुद्ध शुभकार, व्यंजन थाल भरें।
है क्षुधा व्याधि दुखकार, मेरी पूर्ण हरें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

घृत की पावन ले ज्योति, जगमग दीप जले।
श्री जिन पद पूजें भक्त, महातम मोह गले।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, मोहाद्यकार विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

अग्नी में जलाते धूप, मेरे कर्म जरें।
प्रभु आतम सौरभ, नित्य नभ में पूर्ण भरें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

फल ताजे ले रसदार, पावन थाल भरें।
है मोक्ष महाफल सार, पाके हर्ष करें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, का शुभ अर्घ्य करें।
जिन महिमा रही अनर्घ्य, पा मन मोद भरें।।
श्री प्रभाचन्द कृत ग्रन्थ, को हम सब ध्यायें।
तत्त्वार्थ सूत्र शुभकार, की महिमा गाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय, अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दोहा—शांती कर त्रय लोक में, तीर्थंकर परमेश।
देते शांतीधार हम, चरणों अतः विशेष।।

शान्तये शांति शांति धारा...

दोहा—सुरभित करते दश दिशा, उपवन के शुभ फूल।
पुष्पांजलि करते चरण, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा—प्रभाचन्द्र आचार्य कृत, तत्त्वार्थ सूत्र विशेष।
जयमाला गाते 'विशद', है शिव का उपदेश।।

(ज्ञानोदय छन्द)

ग्रन्थ राज तत्त्वार्थ सूत्र शुभ, उमास्वामि कृत रहा विशेष।
सम्यक् ज्ञानका भूषण है जो, जिसमें मोक्ष का है संदेश।।
उसी तरह का कथन किये हैं, प्रभाचन्द्र आचार्य ऋषीष।
है संक्षेप कथन मुक्ती का, जिन पद झुका रहे हम शीश।।१।।

रत्नत्रय ही मोक्ष मार्ग है, प्रथम अध्याय में किए कथन।
नय निक्षेप ज्ञान के भेदों, का कीन्हें उत्तम वर्णन।।
भाव जीव के एवं लक्षण, इन्द्रियादिक विग्रहगति मान।
योनी और शरीर भेद का, दिए भव्य जीवों को ज्ञान।।२।।
अधोलोक में नरक सप्त हैं, जिनका है संक्षेप कथन।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, क्षेत्रादिक का है वर्णन।।
षट् कालों का किए विवेचन, रहे शलाका पुरुष महान।
नर पशु की आयू का उत्तम, औ जघन्य का कथन प्रधान।।३।।
ऊर्ध्व लोक में देवों का शुभ, चौथे अध्याय में है व्याख्यान।
पुद्गलादि अजीव द्रव्य का, अध्याय पंचम में गुणगान।।
छठे अध्याय में अशुभ आश्रव, सप्तम में शुभ का वर्णन।
बन्ध तत्त्व का अष्टम अध्याय, में कीन्हें आचार्य कथन।।४।।
संवर और निर्जरा का शुभ, नवम अध्याय में युक्त कथन।
दशम अध्याय में मोक्ष तत्त्व का, किया गया है दिग्दर्शन।।
इस प्रकार तत्त्वार्थ सूत्र का, पठन श्रवण हो सद् श्रद्धान।
जिसकी पूजा अर्चा हेतू, रचा गया यह 'विशद' विधान।।५।।

दोहा–अर्चा कर जिन ग्रन्थ की, पाएँ मोक्ष का द्वार।
जब तक मुक्ती ना मिले, ध्यायें बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निव० स्वाहा।

दोहा–भक्ती कर मुक्ती मिले, कहते हैं भगवान।
अतः भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

इत्याशीर्वादः

सर्व आचार्य परमेष्ठी का अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री शांति सागर जी, आदिसागराचार्यप्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर॥
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन विशद मेरा सादर॥

ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तत्त्वार्थ सूत्र

प्रथम अध्याय

दोहा-प्रथम अध्याय में मोक्ष पथ, का है शुभ व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।१।।

।।प्रथमोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मंगलाचरण

सद्दृष्टि-ज्ञान-वृत्तात्मा, मोक्षमार्गः सनातनः।
आविरासीद्यतो वंदे, तमहं वीरमच्युतम्।।

अन्वयार्थ–(सद्दृष्टि) सम्यग्दर्शन (ज्ञान)–सम्यग्ज्ञान (वृत्तात्मा), सम्यग्चारित्र रूप (मोक्षमार्गः) मुक्ति का रास्ता (सनातनः) अनादिकाल से (आविरासीद्यतो) जिनका यह उपदेश है उन (वीरं) महावीर भगवान् को (अच्युतम्) स्वभावस्थ या अमर (तमहं) मैं (वंदे) नमस्कार करता हूँ।

अर्थ–सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र रूप सनातन मोक्षमार्ग जिनके उपदेश से प्रकट हुआ है, उन अच्युत वीर की मैं वंदना करता हूँ।

सम्यक् दर्श ज्ञान चारित मय, काल अनादी मुक्ती पंथ।
प्रकट हुआ जिनकी वाणी से, वीर के पद में नमन अनन्त।।

ॐ ह्रीं मोक्ष मार्ग प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सम्यग्दर्शनाऽवगमवृत्तानि मोक्षहेतुः।।१।।

अन्वयार्थ–(सम्यक्) समीचीन (दर्शन) सम्यग्दर्शन (अवगम) सम्यग्ज्ञान (वृत्तानि) सम्यग्चारित्र (तीनों मिले हुये) (मोक्ष) कर्म रहित अवस्था के (हेतुः) कारण हैं।

अर्थ–सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र ये तीनों मिले हुए मोक्षमार्ग है अर्थात् रत्नत्रय की एकता ही मोक्षमार्ग है। अलग-अलग न

अकेला सम्यग्दर्शन मोक्षमार्ग है न ही अकेला सम्यग्ज्ञान और न ही अकेला सम्यग्चारित्र मोक्षमार्ग है।

सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, सम्यक् चारित सर्व।
रहे मोक्ष के हेतु ये, युगपद विशद असर्व।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यक दर्शन-ज्ञान चारित्र समूह मोक्ष मार्ग हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

''जीवादि सप्त तत्त्वम्''।।२।।

अन्वयार्थ–(जीव) जीव (आदि) (सप्त) सात (तत्त्वम्) पदार्थ या तत्त्व हैं।

अर्थ–जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये सात तत्त्व हैं। मोक्ष मार्ग में कारणभूत तत्त्वार्थ पदार्थों का श्रद्धान।

जीव अजीवादिक सभी, तत्त्व कहे भगवान।
बना रहे इनमें सदा, जीवों का श्रद्धान।।२।।

ॐ ह्रीं जीवाजीवादि तत्त्व प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्रभ्यं नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तदर्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।।३।।

अन्वयार्थ–(तदर्थ) तत्त्व और उनके अर्थ की (श्रद्धानं) आस्था-विश्वास ही (सम्यक्) समीचीन (दर्शनम्) दर्शन है।

अर्थ–सात तत्त्वों और उनके अर्थ पर श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है।

रहे प्रयोजन भूत जो, मोक्ष मार्ग में तत्त्व।
उनमें श्रद्धा है विशद, सम्यक् दर्श सुतत्त्व।।३।।

ॐ ह्रीं सम्यक् श्रद्धा प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तद्-उत्पत्तिर्-द्विधा।।४।।

अन्वयार्थ–(तद्) उसकी (उत्पत्तिः) उत्पन्न होना (द्विधा) दो प्रकार से है।

अर्थ–वह सम्यग्दर्शन दो प्रकार से उत्पन्न होता है–निसर्गज और अधिगमज से।

उत्पत्ति सद्दर्श की, होवे दोय प्रकार।
प्रथम निसर्गज अधिगमज, द्वितिय है शुभकार।।४।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन उत्पत्ति, भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नामादिना तन्-न्यासः।।५।।

अन्वयार्थ–(नामादिना) नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव (तन्) उन द्वारा (न्यासः) रखना निक्षेप है अथवा व्यवस्थापन और विभाजन होता है।

अर्थ–नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव रूप से उन सम्यग्दर्शन आदि और जीव आदि का न्यास अर्थात् निक्षेप अर्थात् लोक व्यवहार होता है।

नामादिक हैं न्यास यह, अनुपम चार प्रकार।
जिनसे चलता है विशद, प्रचलित लोक व्यवहार।।५।।

ॐ ह्रीं नामादि न्यास प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रमाणे द्वे।।६।।

अन्वयार्थ–(प्रमाणे) सम्यग्ज्ञान (द्वे) दो प्रकार का है।

अर्थ–प्रमाण के दो भेद हैं–(१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) परोक्ष प्रमाण।

है प्रमाण प्रत्यक्ष शुभ, और परोक्ष प्रमाण।
आगम में यह भेद दो, कहते सम्यक् ज्ञान।।६।।

ॐ ह्रीं प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रमाण प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नयाः सप्त।।७।।

अन्वयार्थ–(नयाः) नये के अवयव (अंश) (सप्त) सात हैं।

अर्थ–नय सात प्रकार के हैं।

सप्त भेद नय के रहे, नैगमादि शुभकार।
जिससे चलता जीव का, सर्व काल व्यवहार।।७।।

ॐ ह्रीं नैगमादि सप्तनय प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तै-रधिगमस्-तत्त्वानाम्।।८।।

अन्वयार्थ–(तैः) उन (प्रमाण व नयों के द्वारा) (अधिगमः) विशेष ज्ञान (तत्वानाम्) जीवादि तत्त्वों का होता है।

अर्थ–उन प्रमाण और नयों के द्वारा जीवादि तत्त्वों का विशेष ज्ञान होता है।

उन प्रमाण नय से सदा, हो तत्वों का ज्ञान।
जिसको पाके जीव यह, पाए केवल ज्ञान।।८।।

ॐ ह्रीं नय प्रमाण प्रति तत्त्व ज्ञान प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सदादिभिश्-च।।९।।

अन्वयार्थ–(च) और (शदादिभिः) सत् आदि के द्वारा भी ज्ञान होता है।

अर्थ–सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर भाव, और अल्पबहुत्व से भी तत्त्वों का विशेष ज्ञान होता है।

तथा सदादिक से विशद, होता है शुभ ज्ञान।
जिसके द्वारा जीव का, हो जाए कल्याण।।९।।

ॐ ह्रीं सदादिक द्रव्य सामान्य गुण प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मत्यादीनि ज्ञानानि।।१०।।

अन्वयार्थ–(मति) मति (आदीनि) आदि (ज्ञानानि) ज्ञान हैं।

अर्थ–मति आदि ज्ञान हैं। अर्थात् मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान ये पाँच ज्ञान हैं।

मत्यादिक जो ज्ञान हैं, अनुपम पंच प्रकार।
है यह सम्यक् ज्ञान शुभ, मुक्ती के आधार।।१०।।

ॐ ह्रीं मत्यादि पंच ज्ञान प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

क्षयोपशम (क्षय) हेतवः (तूनि)।।११।।

अन्वयार्थ–(क्षयोपशम) मत्यादिक क्षयोपशम ज्ञान (क्षय) (हेतवः) हेतुक होते हैं।

अर्थ–मति आदि ज्ञान क्षयोपशमिक और वे (केवलज्ञान) क्षायिक ज्ञान के हेतु हैं।

क्षायोपशमिक हैं ज्ञान शुभ, प्रथम के चार विशेष।
क्षायक ज्ञान अन्तिम रहा, पाते सदा जिनेश।।११।।

ॐ ह्रीं क्षायक-क्षयोपशम ज्ञान भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

षड्विधोऽवधिः।।१२।।

अन्वयार्थ–(षड्) छः (विधः) भेद (अवधिः) अवधिज्ञान के हैं।

अर्थ–क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान छह प्रकार का होता है। अर्थात् अनुगामी, अननुगामी, वर्धमान, हीयमान, अवस्थित, अनवस्थित।

अवधि ज्ञान के भेद यह, अनुगामी वर्धमान।
और अवस्थित तीन के, हैं विपरीत प्रधान।।१२।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान षड् भेद श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

द्विविधो मनः पर्ययः।।१३।।

अन्वयार्थ–(द्वि) दो (विधो) भेद रूप (मनःपर्ययः) मनः पर्ययज्ञान है।

अर्थ–मनः पर्ययज्ञान दो प्रकार का है।

मनः पर्यय के भेद दो, ऋजु विपुल मति जान।
पर के मन की जानता मनः पर्यय शुभज्ञान।।१३।।

ॐ ह्रीं मनः पर्यय ज्ञान भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अखंडं केवलम्।।१४।।

अन्वयार्थ–(अखंडं) भेद रहित अर्थात् सम्पूर्ण (केवलम्) एक मात्र ज्ञान या सहायता रहित ज्ञान (अथवा) भेद-प्रभेद से रहित ज्ञान)।

अर्थ–केवलज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान (अखंड) है उसके कोई भेद-प्रभेद नहीं है।

केवल ज्ञान अखण्ड है, जिसके नहीं प्रभेद।
तीन लोक त्रय काल गत, जाने वस्तु विशेष।।१४।।

ॐ ह्रीं केवल ज्ञान प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

समयं समय-मेकत्र चत्त्वारि।।१५।।

अन्वयार्थ–(समयं) कभी-कभी, एक समय में (समयमेकत्र) एक जीव में (चत्त्वारि) चार ज्ञान होते हैं।

अर्थ–कभी-कभी एक जीव में एक समय में चार ज्ञान तक हो सकते हैं।

युगपत हो सकते कभी, ज्ञान साथ में चार।
मति श्रुतावधि हों तथा, मनः पर्यय शुभकार।।१५।।

ॐ ह्रीं युगपत् ज्ञान प्राप्ति प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

प्रथम अध्याय को पूर्ण कर, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ज्ञान प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः पूर्णअर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

द्वितीय अध्याय:

दोहा–द्वितीय अध्याय में जीव के, भावों का व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।२।।

।।द्वितीयोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जीवस्य पंच भावा:।।१।।

अन्वयार्थ–(जीवस्य) जीव के (पंच) पाँच (भावा:) भाव होते हैं।

अर्थ–जीव के पाँच भाव होते हैं।

पंच भाव हैं जीव के, औदयिक उपशम मिश्र।
क्षायिक पारिणामिक रहे, अतिशय कार पवित्र।।१।।

ॐ ह्रीं जीवस्य असाराधण भाव भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राय नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उपयोगष्-तल्लक्षणम् ।।२।।

अन्वयार्थ–(उपयोग:) चेतन के अनुविधायी परिणाम (जो सदैव साथ रहता है) (तत्) उसका (लक्षणम्) चिह्न है।

अर्थ–उपयोग ही जीव का लक्षण है।

जीव का लक्षण है विशद, कहलाए उपयोग।
चेतन का परिणाम हो, अनुविधायिक संयोग।।२।।

ॐ ह्रीं जीव भेद प्रतिपादक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

स द्विविध:।।३।।

अन्वयार्थ–(स) वह उपयोग (द्वि) दो (विध:) प्रकार का है।

अर्थ–वह उपयोग दो प्रकार का है (१) दर्शनोपयोग (२) ज्ञानोपयोग।

दो प्रकार उपयोग है, दर्शन ज्ञानोपयोग।
चार दर्शनोपयोग हैं, आठ ज्ञान के योग।।३।।

ॐ ह्रीं द्वादश विध उपयोग संकेतक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

द्वीन्द्रियादयस्-त्रसाः ।।४।।

अन्वयार्थ–(द्वीन्द्रिय) दो इन्द्रिय (आदयस्) आदि (त्रसाः) त्रस जीव हैं।

अर्थ–दो इन्द्रिय आदि त्रस जीव हैं।

दो इन्द्रिय आदिक सभी, कहलाए त्रास जीव।
पुण्य पाप के योग से, जग में भ्रमें अतीव।।४।।

ॐ ह्रीं त्रस जीवस्य भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

शेषाः स्थावराः।।५।।

अन्वयार्थ–(शेषाः) बचे हुए जीव (स्थावराः) स्थावर हैं।

अर्थ–शेष बचे हुए जीव स्थावर हैं।

स्थावर हैं शेष सब, कहे गये जो जीव।
हैं निगोदिया भी सभी, पावें दुःख अतीव।।५।।

ॐ ह्रीं स्थावर जीवस्य भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

द्रव्यभावभेदादिंद्रियं द्विप्रकारम्।।६।।

अन्वयार्थ–(द्रव्य) द्रव्य (भाव) भाव (भेदात्) भेद से (इन्द्रियं) इन्द्रियाँ (द्वि) दो (प्रकारम्) प्रकार की हैं।

अर्थ–इन्द्रियाँ द्रव्य और भाव के भेद से दो प्रकार की हैं, अर्थात् द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय।

द्रव्य भाव के भेद से, इन्द्रियों के दो भेद।
द्रव्येन्द्रिय से भाव हों, लब्ध्युपयोग समेत।।६।।

ॐ ह्रीं द्रव्य इन्द्रिय भाव स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

विग्रहाद्या गतयः।।७।।

अन्वयार्थ–(विग्रह) शरीर (आद्या) आदि (गतयः) गतियाँ हैं।

अर्थ–विग्रह आदि गतियाँ चार प्रकार हैं।

ऋजु पाणिमुक्ता तथा, लांगलिका गौ मूत्र।
विग्रहादि गति चार हैं, कहते आगम सूत्र।।७।।

ॐ ह्रीं विग्रहगति आदि चतु: गति प्रतिपादक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सचित्तादयो योनय:।।७।।

अन्वयार्थ–(सचित्त) जीव सहित (आदयो) आदि (योनय:) योनियाँ हैं।

अर्थ–सचित्त आदि योनियाँ हैं। अर्थात् सचित्त, शीत, संवृत, अचित्त, ऊष्ण, विवृत, सचिताचित्त शीतोष्ण और संवृतविवृत।

भेद कहे नौ योनि के, सचित्त उष्ण संवृत्त।
तीनों के विपरीत हों, एवं मिश्र प्रवृत्त।।८।।

ॐ ह्रीं योनि प्रतिपादिक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

औदारिकादीनि शरीराणि।।८।।

अन्वयार्थ–(औदारिक) स्थूल, (आदीनि) आदि (शरीराणि) शरीर हैं।

अर्थ–औदारिक आदि पाँच शरीर होते हैं, अर्थात् औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्मण ये पाँच शरीर होते हैं।

औदारिक वैक्रियक तथा, आहारक शुभकार।
तैजस कार्मण पाँच यह, हैं शरीर आकार।।९।।

ॐ ह्रीं औदारिकादि शरीर प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

एकस्मिन्-नात्मन्या चतुर्भ्य:।।१०।।

अन्वयार्थ–(एकस्मिन्न) एक (आत्मन्या) जीव के (चतुभ्य:) चार शरीर होते हैं।

अर्थ–एक जीव में एक साथ चार शरीर तक हो सकते हैं।

तैजस कार्मण आदि तन, एक साथ हों चार।
पाँच कभी भी हों नहीं, यह शरीर व्यवहार।।१०।।

ॐ ह्रीं तैजस कार्माण शरीर व्यवहार प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आहारकं प्रमत्त (संयत) स्यैव।।११।।

अन्वयार्थ–(आहारकं) आहारक शरीर (प्रमत्त) छठे गुणस्थानवर्ती मुनि (स्यैव) के ही होता है।

प्रमत्त संयत्त मुनी के, आहारक हो देह।
हो सकती है और नहिं, जानो निः सन्देह।।११।।

ॐ ह्रीं आहारक शरीर स्वामि प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तीर्थेश-देव-नारक-भोगभुवोऽखंडायुषः।।१२।।

अन्वयार्थ–(तीर्थेश) तीर्थंकर (देव-नारक) देव, नारकी उत्पाद जन्म वाले (भोगभुवो) भोगभूमि के जीव (अखंडायुषः) अकाल मृत्यु रहित हैं।

अर्थ–तीर्थंकर, उपपाद जन्म वाले देव और नारकी भोगभूमि के जीव अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होते अर्थात् पूर्ण आयु भोगकर ही शरीर छोड़ते हैं।

देव नारकी भोग भू, तीर्थंकर भगवान।
हैं अकाल मृत्यू रहित, इन सबके स्थान।।१२।।

ॐ ह्रीं अनपवर्त्यायुस्क जीव प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

यहाँ द्वितिय अध्याय में, भावों का व्याख्यान।
किए भाव से हम यहाँ, पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं जीव भाव भेद स्वरूप प्ररूपक द्वितीयोऽध्याय श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

तृतीय अध्याय

दोहा–अधो मध्य द्वयलोक का, तृतिय में व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।३।।

।।तृतीयोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

रत्नप्रभाद्याः सप्त भूमयः।।१।।

अन्वयार्थ–(रत्नप्रभा) प्रथम नरक रत्नप्रभा (आद्याः) आदि (सप्त) सात (भूमयः) नरक भूमियाँ हैं।

अर्थ–रत्नप्रभा को आदि लेकर नरक की सात भूमियाँ हैं। अर्थात् रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमः प्रभा और महातमः प्रभा ये नरक भूमियाँ हैं।

(शम्भू-छन्द)

रत्न प्रभादि सप्त भूमियों, मैं बतलाए नरक प्रधान।
घम्मा वंशा मेघा अंजना, अरिष्टा मघवा माघवी मान।।१।।

ॐ ह्रीं रत्न प्रभादि सप्त भूमि प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तासु नारकाः सपंच दुःखाः।।२।।

अन्वयार्थ–(तासु) उन नरकों में (नारकाः) नारकियों को (सपंच) पाँच प्रकार (दुःखाः) दुःख हैं।

अर्थ–उन भूमियों में नारकी निवास करते हैं और नारकियों को पाँच प्रकार के दुःख होते हैं।

रही अशुभतर देह विक्रिया, लेश्या वेदन अरु परिणाम।
पंच प्रकार दुःख नरकों में, हों जीवों के यह अविराम।।२।।

ॐ ह्रीं नरक वेदनादि प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा

जम्बुद्वीप लवणोदादयोऽसंख्येय द्वीपोदधयः।।३।।

अन्वयार्थ–(जम्बुद्वीप) जम्बूद्वीप (लवणोदादयो:) और लवणोदधि आदि समुद्र से लेकर (असंख्येय) असंख्यात (द्वीपोदधय:) द्वीप और समुद्र हैं।

अर्थ–जम्बूद्वीप और लवणोदधि को आदि लेकर असंख्यात द्वीप समुद्र हैं।

जम्बूद्वीप लवणोदधि आदिक, संख्यातीत है द्वीप।
मध्य द्वीप में अन्य अनेकों, सरिता सागर गाए क्षुद्र।।३।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्य नदी समुझदि नाम प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तन्मध्ये लक्षयोजनप्रभः सचूलिको मेरूः।।४।।

अन्वयार्थ–(तन्) उनके (मध्ये) बीच में (लक्ष) लाख (योजन) (प्रभ:) प्रमाण (सचलिको) चूलिका सहित (मेरु:) मेरु पर्वत है।

अर्थ–उन द्वीप समुद्रों के मध्य में १ लाख योजन प्रमाण वाला (चूलिका सहित) सुमेरू पर्वत है।

जम्बूद्वीप के मध्य मेरु है, सहित चूलिका महिमा वान।
एक लाख योजन ऊँचाई, वाला है अति महिमा वान।।४।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्य मेरु चूलिका विस्तार स्वरूप श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

हिमत्वप्रमुखाः षट् कुलनगाः।।५।।

अन्वयार्थ–(हिमवत्) हिमवन् (प्रमुखा:) प्रथम या आदि (षट्) छह (कुलनगा:) कुलाचल या पर्वत हैं।

अर्थ–हिमवन् को आदि लेकर छह कुलाचल हैं। अर्थात् हिमवन् महाहिमवन्, निषध, नील रुक्मि और शिखरणि ये छह पर्वत हैं।

जम्बूद्वीप में सप्त क्षेत्र का, करें विभाजन छह गिरिराज।
हिमवन आदिक के विख्याता, ऋषिवर तारण तरण जहाज है।।५।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपस्थित क्षेत्र, गिरि स्वरूप मेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तेषु पद्मादयो ह्रदाः।।६।।

अन्वयार्थ–(तेषु) उनमें (पद्मादयो) पद्म आदि (ह्रदाः) तालाब हैं।

अर्थ–उन कुलाचलों पर पद्म आदि छह तालाब हैं। अर्थात् पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केशरि, महापुण्डरीक और पुण्डरीक ये छह तालाब हैं।

हैं तालाब पद्म आदिक छह, कुलाचलों पर अतिशय कार।
कमल हैं जिनमें पृथ्वी कायिक, जिनकी शोभा अपरम्पार।।६।।

ॐ ह्रीं कुलायचलोपरि ह्रद स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तन्मध्ये श्र्यादयो देव्यः।।७।।

अन्वयार्थ–(तन्) उनके (मध्ये) बीच में (श्र्यादयो) श्री आदि (देव्यः) देवियाँ हैं।

अर्थ–उन ह्रदों (तालाबों) के बीच में श्री आदि देवियाँ रहती हैं अर्थात् श्री, ह्री, धृति, कीर्त्ति, बुद्धि, लक्ष्मी ये छह देवियाँ रहती हैं।

कमलों पर श्री ह्री धृति कीर्ति, बुद्धि लक्ष्मी नामोंवान।
रहा देवियों का निवास शुभ, श्री जिनेन्द्र की भक्त प्रधान।।७।।

ॐ ह्रीं ह्रदस्थित कमलोपरि देविनिवास प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तेभ्यो गंगादयश्चतुर्दश महानद्यः।।८।।

अन्वयार्थ–(तेभ्यो) उनसे (गंगादयः) गंगा आदि (चतुर्दश) चौदह (नद्यः) नदियाँ निकलती हैं।

अर्थ–उनसे गंगादिक चौदह महानदियाँ निकलती हैं, अर्थात् गंगा-सिन्धु, रोहित-रोहितास्या, हरित्-हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला, रक्ता-रक्तोदा ये १४ नदियाँ बहती हैं।

चौदह नदियों का तालाबों, से होता है सतत् प्रवाह।
चौदह सहस्त्र क्षुद्र नदियों का, गंगा सिन्धू में अवगाह।।८।।

ॐ ह्रीं जम्बू द्वीप स्थितसरिता प्रवाह प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

भरतादीनि वर्षाणि।।९।।

अन्वयार्थ–(भरत) भरत (आदीनि) आदि (वर्षाणि) क्षेत्र हैं।

अर्थ–भरत आदि क्षेत्र हैं। अर्थात् भरतवर्ष, हैमवत्वर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यक् वर्ष, हैरण्यवत् वर्ष और ऐरावत वर्ष ये सात क्षेत्र हैं।

भरत हैमवत हरि विदेह शुभ, रम्यक क्षेत्र हैरण्यवत जान।
ऐरावत ये सप्त क्षेत्र हैं, जम्बू द्वीप में महति महान।।९।।

ॐ ह्रीं भरतादि क्षेत्रस्य प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

त्रिविधा भोगभूमयः।।१०।।

अन्वयार्थ–(त्रि) तीन (विधा) प्रकार (भोगभूमयः) भोगभूमियाँ हैं।

अर्थ–भोग भूमि तीन प्रकार की होती हैं। अर्थात् उत्तम, मध्यम, जघन्य के भेद से भोगभूमि तीन प्रकार की हैं।

भोग भूमियाँ जैनागम में, बतलाई हैं तीन प्रकार।
उत्तम मध्यम हैं जघन्य ये, भोग भूमियाँ मंगलकार।।१०।।

ॐ ह्रीं भोग भूमि भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

भरतैरावतेषु षट्कालाः।।११।।

अन्वयार्थ–(भरतैरावतेषु) भरत, ऐरावत में (षट्) छह (कालाः) काल वर्तते होते हैं।

अर्थ–भरत और ऐरावत क्षेत्रों में छह काल वर्तते हैं, अर्थात् सुषमा-सुषमा, सुषमा, सुषमा-दुषमा, दुषमा-सुषमा-दुषमा दुषमा-दुषमा ये छह काल परिवर्तित होते हैं।

भरतैरावत क्षेत्र में होते, सुषमा-सुषमा सुषमा काल।
सुषमा-दुषमा दुषमा-दुषमा, दुषमा अति दुखमा छह काल।।११।।

ॐ ह्रीं भरतैरावत षड्कालिक परिवर्तन प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

विदेहेषु सन्ततश्चतुर्थः।।१२।।

अन्वयार्थ–(विदेहेषु) विदेह क्षेत्र में (सन्ततः) सदाकाल (चतुर्थः) चौथा (काल वर्तता है)।

अर्थ–विदेह क्षेत्र में सदा (एक-सा) चतुर्थ काल ही रहता है, अर्थात् पाँच विदेहों में काल का परिवर्तन नहीं होता इस कारण वहाँ सदा दुषमा-सुषमा जैसा काल रहता है।

क्षेत्र विदेह अवस्थित रहते, रहे हमेशा चौथा काल।
दुषमा-सुषमा काल के जैसी, होय प्रवृत्ती वहाँ त्रिकाल।।१२।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रावस्थिति प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आर्या म्लेच्छाश्च नराः।।१३।।

अन्वयार्थ–(आर्या) आर्य (च) और (म्लेच्छाः) म्लेच्छ (नराः) मनुष्य होते हैं।

अर्थ–मनुष्य आर्य और म्लेच्छ के भेद से दो प्रकार के होते हैं।

मानव आर्य म्लेच्छ रूप से, होते हैं प्रवृत्ती वान।
आर्य व्रती होकर करते हैं, सम्यक् तप करके कल्याण।।१३।।

ॐ ह्रीं मानव आर्य म्लेच्छादि भेद स्वरूप श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

त्रिषष्ठि शलाका पुरुषाः।।१४।।

अन्वयार्थ–(त्रिषष्ठि) त्रेसठ (शलाका) महान् (पुरुषाः) मनुष्य (होते हैं)।

अर्थ–त्रेसठ शलाका पुरुष होते हैं।

तीर्थंकर चौबिस चक्री हों, आधे नारायण नौ जान।
बलदेव प्रति नारायण नौ-नौ, कहे शलाका पुरुष महान।।१४।।

ॐ ह्रीं शलाकापुरुष निरूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

एकादश रुद्राः।।१५।।

अन्वयार्थ–(एकादश) ग्यारह (रुद्राः) रुद्र हैं।

अर्थ–रुद्र ग्यारह होते हैं।

रौद्र रूप के धारी होकर, विचरण करते ग्यारह रुद्र।
कलह प्रिय भारी होते हैं, चेष्टाएँ करते जो क्षुद्र।।१५।।

ॐ ह्रीं रुद्र संख्य स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नव नारदाः।।१६।।

अन्वयार्थ–(नव) नौ (नारदाः) नारद हैं।

अर्थ–नौ नारद होते हैं।

कलह प्रिय नारद नौ होते, विद्यायें पाते कई एक।
क्रोध मान मायाचारी कर, भूलें अपना स्वयं विवेक।।१६।।

ॐ ह्रीं नारद संख्या प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चतुर्विंशति कामदेवाः।।१७।।

अन्वयार्थ–(चतुर्विंशति) चौबीस (कामदेवाः) काम देव हैं।

अर्थ–चौबीस कामदेव होते हैं।

कामदेव चौबिस होते हैं, होवे जब उत्सर्पिणी काल।
अवसर्पिणी में भी होते हैं, एक सौ उन्हत्तर पुरुष त्रिकाल।।१७।।

ॐ ह्रीं कामदेव संख्या प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मनुष्य-तिरश्चामुत्कृष्ट-जघन्यायुषी-त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते।।१८।।

अन्वयार्थ–(मनुष्य) मानव या आदमी (तिरश्चां) व तिर्यंचों में (उत्कृष्ट) उत्कृष्ट (जघन्य) जघन्य (आयुषी) आयु (त्रिपल्योपम) तीन पल्य (अन्तर्मुहुर्त है।

अर्थ–मनुष्य और तिर्यंचों की उत्कृष्ट आयु तीन पल्य की और जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त की होती है।

नर तिर्यञ्च की उत्तम आयू, तीन पल्य की महति महान।
है जघन्य अन्तर्मुहूर्त ही, ऐसा कहते जिन भगवान।।१८।।

ॐ ह्री नरपशु उत्कृष्ट जघन्य आयु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दोहा–**अधोमध्यद्वयलोक का किया यहाँ व्याख्यान।**
अर्चा करके सूत्र की पायें सम्यग्ज्ञान।।

ॐ ह्री नरपशु उत्कृष्ट जघन्य आयु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा

●

चतुर्थ अध्यायः

दोहा—चौथे अध्याय में स्वर्ग के, देवों का व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।४।।

।।चतुर्थोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

दशाऽष्टपंच भेदभावन-व्यन्तर-ज्योतिष्काः।।१।।

अन्वयार्थ—(दश) दश (अष्ट) आठ (पंच) पाँच (भेद) प्रकार (भावन) भवनवासी (व्यन्तर) व्यन्तर देव (ज्योतिष्काः) ज्योतिषी देवों के हैं।

अर्थ—भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषियों के क्रम से दश, आठ और पाँच भेद हैं।

भवन वासि दश हैं तथा, व्यन्तर आठ विशेष।
पाँच ज्योतिषी देव हैं, कहते वीर जिनेश।।१।।

ॐ ह्रीं भवनदिक देव भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

वैमानिका द्विविधाः कल्पज कल्पातीत भेदात्।।२।।

अन्वयार्थ—(वैमानिका) वैमानिक देव (द्वि) दो (विधाः) प्रकार (कल्पज) कल्पवासी (कल्पातीत) कल्पातीत (भेदात्) भेद से हैं।

अर्थ—वैमानिक देव कल्पवासी और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते हैं।

वैमानिक के भेद दो, कल्पज कल्पातीत।
स्वर्गों के वासी कहे, गाए सभी विनीत।।२।।

ॐ ह्रीं वैमानिक देव भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सौधर्मादयः षोडश कल्पाः।।३।।

अन्वयार्थ—(सौधर्मादयः) सौधर्म आदि (षोडश) सोलह (कल्पाः)

स्वर्ग या कल्प हैं।

अर्थ–सौधर्म आदि सोलह कल्प हैं।

सोलह सौधर्मादि सब, कल्प कहे भगवान।
युगल रूप दो-दो रहे, ऊर्ध्व लोक में मान।।३।।

ॐ ह्रीं कल्पस्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ब्रह्मालया लौकान्तिकाः।।४।।

अन्वयार्थ–(ब्रह्मालया) ब्रह्मलोक में (लौकान्तिकाः) लौकान्तिक देव हैं।

अर्थ–लौकान्तिक देव ब्रह्म कल्प के निवासी हैं।

आवें तप कल्याण में, अनुमोदन को जान।
लौकान्तिक ब्रह्म लोक के, ब्रह्म ऋषीवत् आन।।४।।

ॐ ह्रीं लौकान्तिक स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ग्रैवेयकाद्या अकल्पाः।।५।।

अन्वयार्थ–(ग्रैवेयकाद्या) ग्रैवेयक आदि (अकल्पाः) कल्पातीत हैं।

अर्थ–ग्रैवेयक आदि कल्पातीत हैं अर्थात् नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पाँच अनुत्तर कल्प संज्ञा से रहित होते हैं।

ग्रैवेयक आदिक सभी, कल्पातीत महान्।
ग्रीवक के ऊपर सभी, सम्यक्त्वी हों मान।।५।।

ॐ ह्रीं कल्पातीत देव स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सामान्यतो देवनारकाणा-मुत्कृष्टेतर स्थिति-
त्रयस्त्रिंशत्सागरायुताब्दाः।।६।।

अन्वयार्थ–(सामान्यतो) सामान्यतया (देवनारकाणां) देव, नारकी के (उत्कृष्टः) उत्कृष्ट तैंतीस सागर (इतर) जघन्य (स्थितिः) आयु (त्रयस्त्रिंशत्) तैंतीस (सागरः युताब्दाः) तैंतीस सागर और दस हजार वर्ष है।

अर्थ–सामान्यतया देव और नारकियों की उत्कृष्टि स्थिति ३३ सागार और जघन्य स्थिति १० हजार वर्ष की है।

देव नारकियों की रही, तैंतिस सागर श्रेष्ठ।
उत्तम आयु जघन्य है, दश हज्जार यथेष्ठ।।६।।

ॐ ह्रीं देव नारकी आयु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा–देवों के स्वरूप का, एवं भेद विशेष।
का वर्णन अध्याय में, कीन्हें श्री जिनेश।।

ॐ ह्रीं देव नारकी आयु प्ररूपक चतुर्थोध्याय श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

पंचम अध्याय

दोहा–पुद्गल द्रव्य का है कथन, पंचमोऽध्याय में जान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।५।।

।।पंचमोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पंचास्तिकायाः।।१।।

अन्वयार्थ–(पंच) पाँच (अस्तिकायाः) अस्तिकाय हैं।

अर्थ–पाँच अस्तिकाय होते हैं अर्थात् जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश ये पाँच अस्तिकाय होते हैं।

पुद्गल धर्माधर्म हैं, जीव और आकाश।
अस्तिकाय यह पाँच हैं, आगम वर्णित खास।।१।।

ॐ ह्रीं अस्तिकाय भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नित्याऽवस्थिताः।।२।।

अन्वयार्थ–वे अस्तिकाय (नित्य) नित्य (अवस्थिताः) अवस्थित हैं।

अर्थ–पाँचों अस्तिकाय नित्य हैं और अवस्थित हैं।

नित्य सभी ये अवस्थित, कहे जो अस्तिकाय।
अविनाशी जो हैं विशद, बहु प्रदेशी ज्यों काय।।२।।

ॐ ह्रीं अस्तिकाय अवस्थिति प्रदेश स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

रूपिणः पुद्गलाः।।३।।

अन्वयार्थ–(रूपिणः) रूपी (पुद्गलाः) पुद्गल है।

अर्थ–पुद्गल रूपी है।

पुद्गल रूपी जानिए, कहते श्री जिनाय।
शेष अरूपी हैं सभी, निज अस्तित्व बनाय।।३।।

ॐ ह्रीं रूप्यरूपि द्रव्य स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

धर्मादे-रक्रियत्वम्।।४।।

अन्वयार्थ–(धर्मादेः) धर्म आदि (अक्रियत्वम्) अक्रिय/निष्क्रिय हैं।

अर्थ–धर्म आदि के अक्रियत्व हैं, अर्थात् धर्म, अधर्म और आकाश अस्तिकाय निष्क्रिय हैं।

धर्माधर्म आकाश ये, निष्क्रिय अस्तिकाय।
हैं निमित्त उदासीन जो, कहते श्री जिनाय।।४।।

ॐ ह्रीं उदासीन निष्क्रय अस्तिकाय श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जीवादेर्-लोकाकाशेऽवगाहः।।५।।

अन्वयार्थ–(जीवादेः) जीव आदि (लोकाकाशे) लोकाकाश में (अवगाहः) अवगाह (निवास) करते हैं।

अर्थ–जीवादिक का लोकाकाश में अवगाह (निवास) है।

लोकाकाश में हो सदा, जीवादिक अवगाह।
भेद ज्ञान से जीव के, मिटे कर्म की दाह।।५।।

ॐ ह्रीं लोकाकाशे जीवावगाह प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सत्त्वं द्रव्य लक्षणम्।।६।।

अन्वयार्थ–(सत्त्वं) सत् (द्रव्य) द्रव्य का (लक्षणम्) लक्षण है।

अर्थ–सत् द्रव्य का लक्षण है।

द्रव्य का लक्षण सत् रहा, होता नहीं विनाश।
जो उत्पाद व्यय ध्रौव्य युत, होता है प्रतिभाष।।६।।

ॐ ह्रीं द्रव्यलहाण स्वरूप श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्पादादि युक्तं सत्।।७।।

अन्वयार्थ–(उत्पादादि) उत्पाद आदि से (युक्तं) जो युक्त है वह (सत्) सत् है।

अर्थ–उत्पाद आदि से जो युक्त है, वह सत् है।

उत्पादादिक युक्त जो, सत् कहलाए खास।
विशद ज्ञानियों के सदा, जिसका होय प्रकाश।।७।।

ॐ ह्रीं सत् लक्षण प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सह-क्रमभावि-गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्।।८।।

अन्वयार्थ–(सहक्रमभावि) सहभावि, क्रमभावि (गुणपर्ययवद्) गुण पर्यय वाला (द्रव्यम्) द्रव्य होता है।

अर्थ–द्रव्य सहभावि गुणों तथा क्रमभावि पर्यायों वाला होता है अर्थात् अन्वयी गुण है और व्यतिरेक परिणाम पर्याय है।

सह भावि क्रम भावि दो, संयुत पर्यय वान।
द्रव्य रहा इस लोक में, कहते जिन भगवान्।।८।।

ॐ ह्रीं द्रव्य पर्याय स्वरूप श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कालश्च।।९।।

अन्वयार्थ–(कालश्च) काल भी।

अर्थ–काल भी द्रव्य है।

काल भी द्रव्य कहते प्रभू, अस्तिकाय नहिं जान।
एक प्रदेशी जो रहा, अनास्तिकाय है मान।।९।।

ॐ ह्रीं द्रव्य लक्षण स्वरूप श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अनन्त-समयश्च।।१०।।

अन्वयार्थ–(अनन्त) अनंत या असीमित (समयश्च) समय है।

अर्थ–काल द्रव्य अनंत समय (पर्याय) वाला है। अर्थात् व्यवहार काल द्रव्य अनंत समय वाला है, जबकि वर्तमान एक समय मात्र ही है, फिर भी भूत और भविष्यत की अपेक्षा अनंत समय वाला है।

काल असीमित समय युत, बतलाए भगवान।
है अनादि अनन्त जो, आगम का व्याख्यान।।१०।।

ॐ ह्रीं कालवधिप्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गुणाना-मगुणत्वम्।।११।।

अन्वयार्थ–(गुणानाम्) गुणों के (अगुणत्वम्) गुणत्व नहीं है।

अर्थ–गुणों के गुणत्व नहीं होता। अर्थात् गुणों के कोई गुण नहीं होते हैं।

न गुणत्व गुण में रहा, गुण है ना गुणवान।
द्रव्याश्रय रहता विशद, कहते जिन भगवान।।११।।

ॐ ह्रीं निर्गुनत्व प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अस्तिकाय एवं कही, पुद्गल द्रव्य विशेष।
किये कथन संक्षेप में, जैनाचार्य विशेष।।१२।।

ॐ ह्रीं अस्तिकाय पुद्गल प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः पंचमोऽध्यायः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

छठवाँ अध्याय

दोहा–अशुभ आश्रव का है कथन, छठें अध्याय में मान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।६।।

।।षष्ठोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

त्रिकरणैः कर्म योगः।।१।।

अन्वयार्थ–(त्रिकरणैः) तीन करणों के द्वारा (कर्म) जो कार्य होता है (योगः) वही योग है।

अर्थ–तीन करणों से (मन, वचन, काय से) की जाने वाली क्रिया को योग कहते हैं।

जिसके द्वारा बढ़े जीव के, जन्म जरा मृत्यु का रोग।
करण तीन मन वचन काय से, क्रिया होय जो है वह योग।।१।।

ॐ ह्रीं योग स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

प्रशस्ताऽप्रशस्तौ।।२।।

अन्वयार्थ–वह योग (प्रशस्ताऽप्रशस्तौ) शुभ और अशुभ दो रूप होता है।

अर्थ–योग प्रशस्त और अप्रशस्त के भेद से दो प्रकार के हैं।

योग शुभाशुभ रूप रहा दो, होय शुभाशुभ के संयोग।
करे कर्म जो अशुभ जीव यह, नाश होय जिसका धर योग।।२।।

ॐ ह्रीं शुभाशुभ योग स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पुण्य पापयोः (हेतु)।।३।।

अन्वयार्थ–वह द्विविध योग क्रमशः (पुण्य पापयोः) पुण्य और पाप रूप में (हेतु) कारण है।

अर्थ–प्रशस्त योग पुण्य का और अप्रशस्त योग पाप का हेतु (आस्रव) है।

द्विविध योग क्रमशः होता है, पुण्य पाप में कारण जान।
होय शुभाशुभ आश्रव जिससे, ऐसा कहते जिन भगवान।।३।।

ॐ ह्रीं पुण्य पापाश्रव हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

गुरु निह्नवादयो ज्ञान-दर्शनावरणयोः।।४।।

अन्वयार्थ–(गुरुनिह्नवादयो) गुरु का नाम छिपाना व मात्सर्य अन्तराय आदि भावों से (ज्ञानदर्शनावरणयोः) ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्म का आस्रव होता है।

अर्थ–गुरु निह्नव आदि ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी आस्रव के हेतु हैं। अर्थात् निह्नव, प्रदोष मात्सर्य, अन्तराय, आसादना और उपघात आदि से ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म का आस्रव होता है।

गुरु का नाम छिपाना निह्नव, मात्सर्य अन्तराय विशेष।
भावों से हो ज्ञान-दर्शनावरण, कर्म आश्रव अवशेष।।४।।

ॐ ह्रीं ज्ञान दर्शनावरणास्रव हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दुःखव्रत्यनुकंपाद्या असातासातयोः।।५।।

अन्वयार्थ–(दुःख व्रत्यनुकंपाद्या) दुःख आदि, व्रतावस्था अनुकंपा आदि भाव (असातासातयोः) असाता एवं साता कर्म के कारण हैं।

अर्थ–दुःख आदि असाता के, व्रत्यनुकम्पा आदि साता के आस्रव के हेतु हैं। अर्थात् दुःख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध और परिदेवन ये असाता-वेदनीय कर्म के और अनुकम्पा, दान, सराग, संयम, शान्ति और शौच ये सातावेदनीय कर्म के आस्रव के हेतु हैं।

दुःख आदि हो व्रतावस्था, अनुकम्पा आदिक के भाव।
कर्म असाता एवं साता के कारण हैं सारे भाव।।५।।

ॐ ह्रीं असाता साता वेदनीक कर्म हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

केवल्यादि विवादो (द्यवर्णवादो?) दर्शनमोहस्य।।६।।

अन्वयार्थ–(केवल्यादिविवादो) केवली आदि का विवाद (द्यवर्णवादो) उन्हें झूठ दोष लगाना, (दर्शन मोहस्य) दर्शन में मोहनीय कर्म का कारण है।

अर्थ–केवली आदि का विवाद (अवर्णवाद) दर्शनमोहनीय कर्म का हेतु है अर्थात् केवली, श्रुत, धर्म और देव इन का अवर्णवाद करना दर्शनमोहनीय कर्म के आस्रव का कारण है।

केवलीआदिक के विवाद सब, दर्शन मोह के हेतु रहे।
मिथ्यात्वी हों जीव जगत में, जन्ममरण के दुःख सहे।।६।।

ॐ ह्रीं दर्शन मोहाश्रव प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कषाय जनित-तीव्रपरिणामश्-चारित्रमोहस्य।।७।।

अन्वयार्थ–(कषायजनित) कषाय से उत्पन्न (तीव्र परिणामः) आवेश पूर्ण भाव (चारित्रमोहस्य) चारित्र मोह का हेतु है।

अर्थ–कषाय से युक्त तीव्र परिणाम चारित्र मोहनीय कर्म के आस्रव का कारण है।

कषायजनित परिणाम तीव्रता, चारितमोह के हेतु रहे।
भ्रमण करें चारों गतियों में, प्राणी अगणित दुःख सहे।।

ॐ ह्रीं चारित्रमोह प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बह्वारंभ-परिग्रहाद्या नारकाद्यायुष्क हेतवः।।८।।

अन्वयार्थ–(बह्वारंभपरिग्रहाद्या) बहुत आरंभ और परिग्रह आदि (नारकाद्यायुष्क) नारकादि आयुओं के (हेतवः) कारण हैं।

अर्थ–बहुत आरंभ और बहु परिग्रह आदि नारकादि आयुओं के हेतु हैं।

बहु आरम्भ परिग्रह नारक, माया पशुगति की कारण।
अल्पारम्भ परिग्रह एवं, व्रत सुरगति के हैं कारण।।८।।

ॐ ह्रीं नरकाद्यायु आश्रव प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

योग वक्रताद्या अशुभ नाम्नः।।९।।

अन्वयार्थ–(योगवक्रताद्या) योग/मन वचन काय की विकृति आदि (अशुभनाम्नः) अशुभनामकर्म के आस्रव के हेतु हैं।

अर्थ–योगों की वक्रता अशुभ नामकर्म के आस्रव का हेतु है। अर्थात् मन, वचन, काय की बुरी प्रवृत्ति अशुभ नामकर्म के आस्रव का कारण है।

योग वक्रता अशुभनाम के, आश्रव में हेतू गाए।
जिनके कारण जीव जगत में, भटक-भटक के दुख पाए।।९।।

ॐ ह्रीं अशुभ नाम कर्म आश्रव प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तद्-वैपरीत्यं शुभस्य।।१०।।

अन्वयार्थ–(तद्वैपरीत्यं) उससे/अशुभ आस्रव से विपरीत योग (शुभस्य) सरलता आदि शुभ नाम कर्म के आस्रव के हेतु हैं।

अर्थ–अशुभ नामकर्म के आस्रव के हेतुओं से विपरीत योग की सरलता आदि शुभ नामकर्म के हेतु हैं।

इसके जो विपरीत सरलता, शुभ के हेतू बतलाए।
जिससे सुन्दर देह प्राप्त कर, जन जन का मन हर्षाए।।१०।।

ॐ ह्रीं शुभनाम कर्म हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश भावनास्-तीर्थकरत्वस्य।।११।।

अन्वयार्थ–(दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशभावनाः) दर्शन विशुद्धि आदि सोलह कारण भावनायें (तीर्थकरत्वस्य) तीर्थंकर नाम के आस्रव की हेतु हैं।

अर्थ–दर्शन विशुद्धि आदि सोलह कारण भावनाओं से तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है, अर्थात् दर्शन विशुद्धि, विनय-सम्पन्नता, शील-व्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तिस्त्याग,शक्तिस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अरिहंत भक्ति, आचार्य भक्ति, बहुश्रुत भक्ति, प्रवचन भक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना और प्रवचन वात्सल्यत्व ये तीर्थंकर नामकर्म के आस्रव के कारण हैं।

दर्श विशुद्धि आदिक सोलह, भावनाएँ तीर्थंकर नाम।
कर्म के आश्रव में हेतू हैं, जिनको करते विशद प्रणाम।।११।।

ॐ ह्रीं सोलह कारण भावना भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आत्मविकत्थनाद्या नीचैर्-गोत्रस्य।।१२।।

अन्वयार्थ–(आत्मविकत्थन/श्लाघा) आत्म प्रशंसा/स्वयं की प्रशंसा (आद्या) आदि (नीचैर्गोत्रस्य) नीच गोत्र के हेतु हैं।

अर्थ–अपनी प्रशंसा आदि नीच गोत्र के आस्रव का हेतु है। अर्थात् आत्मप्रशंसा, पर निन्दा, दूसरों के सद्गुणों का आच्छादन और अपने असद्गुणों का उद्भावन ये नीच गोत्र के आस्रव के कारण हैं।

आत्म प्रशंसा आदिक सारे, नीच गोत्र के हेतु रहे।
गर्हित कुल में जन्म प्राप्त कर, निन्दित हो कई कष्ट सहे।।१२।।

ॐ ह्रीं नीच गोत्र प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तद्-वैयत्ययो महतः।।१३।।

अन्वयार्थ–(तद्व्यत्ययो) उससे विपरीत (नीच गोत्र से) आत्म निन्दा आदि (महतः) उच्च गोत्र के आस्रव हैं।

अर्थ–नीच गोत्र के आस्रव के हेतुओं से विपरीत-आत्मनिन्दा आदि उच्च गोत्र के आस्रव के हेतु हैं। अर्थात् आत्मनिन्दा, पर प्रशंसा, दूसरों के सद्गुणों का उद्भावन और अपने असद्गुणों का उच्छादन, नम्रवृत्ति और अनुत्सेक ये उच्च गोत्र कर्म के आस्रव के हेतु हैं।

नीच गोत्र के हेतु कहे जो, इसके हैं जो भी विपरीत।
करे आत्म निंदा जो प्राणी, उच्चगोत्र से धारे प्रीत।।१३।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

दानादि विघ्नकरण-मंतरायस्य।।१४।।

अन्वयार्थ–(दानादिविघ्नकरणम्) दानादि में विघ्न करना, (अन्तरायस्य) अन्तराय कर्म के आस्रव का हेतु है।

अर्थ–दानादि में बाधा उत्पन्न करना अन्तराय कर्म के आस्रव का हेतु है। अर्थात् दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य में विघ्न करना अन्तराय कर्म के आस्रव का कारण हैं।

दानादिक में विघ्न डालना, अन्तराय के हेतु कहे।
शास्त्र ज्ञान कर करे क्रिया तो, कटते सारे पाप रहे।।१४।।

ॐ ह्रीं अन्तराय निरूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा–**अशुभास्रव के हेतु व, लक्षण का व्याख्यान।**
किए छठें अध्याय में, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं अशुभास्रव निरूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां षष्ठोध्याय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

सप्तम अध्याय

दोहा—महाव्रत शुभ आश्रव कथन, अध्याय सात में जान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।७।।

।।सप्तमोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

हिंसादि पंच विरतिर्-व्रतम्।।१।।

अन्वयार्थ—(हिंसादि) हिंसा आदि (पंच) पाँच से (विरतिः) विरक्ति/निवृत्ति (व्रतम्) व्रत है।

अर्थ—हिंसादि पाँच पापों से विरक्त होना व्रत है अर्थात् हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म और परिग्रह से विरक्त होना व्रत है।

दोहा—पंच पाप हिंसादि से, निवृत हो व्रत वान।
सम्यक् चारित प्राप्त कर, करे विशद कल्याण।।१।।

ॐ ह्रीं व्रत स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

महाऽणुभेदेन तद् द्विविधम्।।२।।

अन्वयार्थ—(तद्) वह (महाऽणु) महाव्रत, अणुव्रत (भेदेन) भेद से (द्विविधम्) दो प्रकार का है।

अर्थ—यह व्रत महाव्रत और अणुव्रत के भेद से दो प्रकार का है अर्थात् अहिंसा महाव्रत, सत्यमहाव्रत, अचौर्यमहाव्रत, ब्रह्मचर्य महाव्रत, अपरिग्रह महाव्रत ये पाँच महाव्रत और अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत, परिग्रहपरिमाणाणुव्रत ये पाँच अणुव्रत हैं।

कहे महाव्रत अणुव्रत, भेद मुख्य दो मान।
तीन लोक में श्रेष्ठ है, व्रत अति महिमावान।।२।।

ॐ ह्रीं व्रत स्वरूप भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तद्दार्ढयाय भावनाः पंचविंशतिः।।३।।

अन्वयार्थ–(तद्) उसकी (दार्ढयाय) दृढ़ता के लिए (भावना:) भावना (पंचविंशति:) पच्चीस हैं।

अर्थ–उन व्रतों की दृढ़ता के लिए पच्चीस अर्थात् प्रत्येक व्रत की पाँच-पाँच भावनाएँ हैं।

व्रत की दृढ़ता के लिए, भावनाएँ पच्चीस।
जिनसे दृढ़ता हो विशद, कहते जैन मुनीश।।३।।

ॐ ह्रीं व्रत भावना स्वरूप भेद श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मैत्र्यादयस्-चतस्रः।।४।।

अन्वयार्थ–(मैत्र्यादय:) मैत्री आदि (चतस्र:) चार (भावनायें और हैं)।

अर्थ–मैत्री आदि चार भावनाएँ और होती हैं अर्थात् प्राणीमात्र में मैत्री, गुणाधिकों में प्रमोद, क्लिश्यमानों में करुणावृत्ति, विपरीत वृत्ति वालों में माध्यस्थ भावना ये चार अहिंसा आदि व्रतों में स्थिरता के हेतु हैं।

मैत्री आदिक चार भी, भाते स्वयं ऋषीश।
करते जिन पद वन्दना, चरणों में धर सीस।।४।।

ॐ ह्रीं मैत्र्यादि भावना भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

श्रमणाना-मष्टाविंशतिर्-मूलगुणाः।।५।।

अन्वयार्थ–(श्रमणानाम्) मुनियों के (अष्टाविंशति:) अट्ठाईश (मूलगुणा:) मूलगुण हैं।

अर्थ–मुनियों के अट्ठाईश मूलगुण होते हैं। अर्थात् मुनिराजों के पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रिय विजय, षट् आवश्यक, सात विशेष गुण ये २८ मूलगुण होते हैं।

मुनियों के हैं मूलगुण, अट्ठाइस शुभकार।
पालन करके भाव से, हो कर्मों का क्षार।।५।।

ॐ ह्रीं अनगार मूल गुण प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

श्रावकाणा-मष्टौ।।६।।

अन्वयार्थ–(श्रावकाणाम्) श्रावकों के (अष्टौ) आठ (मूलगुण हैं)

अर्थ–श्रावकों के आठ मूलगुण होते हैं, अर्थात् मद्यत्याग, मांसत्याग, मधुत्याग, पंच उदुम्बर फल का त्याग, रात्रि भोजन त्याग, जीवों पर दया करना, पंच परमेष्ठी भक्ति और पानी छानकर पीना ये श्रावक के आठ मूलगुण हैं।

श्रावक के हैं आठ गुण, पालें बारम्बार।
संचय करते पुण्य का, जग में अपरम्पार।।६।।

ॐ ह्रीं श्रावक मूल गुण प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

शील सप्तकं च।।७।।

अन्वयार्थ–(शील) शील (सप्तकं) सात (च) और हैं।

अर्थ–और सात शील भी श्रावकों के गुण हैं। अर्थात् तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत ये सात शील हैं।

अणुव्रतों के शील हैं, गुण शिक्षा व्रत सात।
सहयोगी जो व्रतों के, हैं जग में विख्यात।।७।।

ॐ ह्रीं गुण शिक्षाव्रत शील स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

शंकाद्याः सम्यग्दृष्टे-रतीचाराः।।८।।

अन्वयार्थ–(शंकाद्याः) शंका आदि (सम्यग्दृष्टेः) सम्यग्दर्शने के (अतीचाराः) अतिचार हैं।

अर्थ–शंका आदि सम्यग्दर्शन के पाँच अतिचार हैं। अर्थात् शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा, अन्यदृष्टि प्रशंसा और अन्य दृष्टिसंस्तव ये सम्यग्दर्शन के पाँच अतिचार हैं।

शंकादिक सद्दर्श के, जानो पंचातिचार।
श्रद्धा गुण में दोष कर, भटकाएँ संसार।।८।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनातिचार प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

बंधादयो व्रतानाम्।।९।।

अन्वयार्थ–(बंधादयो) बंध आदि (व्रतानाम्) व्रतों के अतिचार हैं।

अर्थ–बंधादि अहिंसा अणुव्रत के अतिचार हैं। पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत इन सभी के पाँच-पाँच अतिचार होते हैं।

व्रत के बन्धादिक रहे, पंच पंच अतिचार।
तज के व्रत जो पालते, पावें वे भव पार।।९।।

मित्र-स्मृत्याद्याः संन्यासस्य।।१०।।

अन्वयार्थ–(मित्रस्मृतिः) मित्र स्मरण (आद्याः) आदि (संन्यासस्य) संन्यास के अतिचार हैं।

अर्थ–मित्रस्मरण आदि संन्यास के अतिचार हैं अर्थात् मित्रस्मृति, जीविताशंसा, मरणाशंसा, सुखानुबन्ध और निदान ये सल्लेखना के पाँच अतिचार हैं।

मित्र स्मृति आदिक मरण, के गाए अतिचार।
हैं अतिचार सन्यास के, तजिए भाव विचार।।१०।।

ॐ ह्रीं सन्यास अतिचार प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

स्व-पर हिताय स्वस्याति-सर्जनं दानम्।।११।।

अन्वयार्थ–(स्वपर) स्वयं के, पर के (हिताय) हितार्थ (स्वस्याति) अपनी वस्तु का (सर्जनं) त्याग (दानम्) दान है।

अर्थ–अपने और पर के हित के लिए वस्तु का त्याग करना दान है। अर्थात् आहार, औषधि, अभय और शास्त्र का स्वयं के हित के लिए साथ ही दूसरों के हित के लिए इनको देना दान है।

स्वपर के हित हेतु शुभ, निज वस्तु का त्याग।
दान कहायें यह विशद, तजे वस्तु का राग।।११।।

ॐ ह्रीं त्याग स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा-**व्रत शुभ आस्रव का विशद, कथन किये आचार्य।**
प्रभाचन्द्र मुनिराज की, करें वन्दना आर्य।।

ॐ ह्रीं शुभाशुभ आस्रव प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां सप्तमोध्याय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

अध्याय अष्टम्

दोहा–बंध तत्त्व का है विशद, अध्याय में व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।८।।

।।अष्टमोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मिथ्यादर्शनादयः बन्ध-हेतवः।।१।।

अन्वयार्थ–(मिथ्यादर्शनादयः) मिथ्यादर्शन आदि (बन्ध) बन्ध (हेतवः) कारण हैं।

अर्थ–मिथ्यादर्शन आदि बन्ध के कारण हैं अर्थात् मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग ये बन्ध के हेतु हैं।

मिथ्यादर्शन आदि हैं, बन्ध के हेतू खास।
दुखदायी जो लोक में, कीजे यह विश्वास।।१।।

ॐ ह्रीं बन्ध हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चतुर्धा बन्धाः।।२।।

अन्वयार्थ–(चतुर्धा) चार प्रकार का (बन्धाः) बन्ध है।

अर्थ–बन्ध चार प्रकार का होता है। अर्थात् प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश ये चार भेद हैं।

भेद बन्ध के चार हैं, इस जग में विख्यात।
जिनके लक्षण जानकर, देना जिनको मात।।२।।

ॐ ह्रीं बन्ध लक्षणं प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मूलप्रकृतयोऽष्टौ।।३।।

अन्वयार्थ–(मूल) मुख्य (प्रकृतयो) प्रकृतियाँ (अष्टौ) आठ हैं।

अर्थ–कर्म की मूल प्रकृति आठ हैं। अर्थात् पहला प्रकृति बन्ध ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय ये आठ प्रकार का है।

मूल प्रकृतियाँ आठ हैं, द्रव्य बन्ध की खास।
करें जीव के गुण सभी, कर्म पूर्णतः नाश।।३।।

ॐ ह्रीं मूल कर्म प्रकृति स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तरा अष्ट-चत्त्वारिंशच्छतम्।।४।।

अन्वयार्थ–(उत्तरा) उत्तर (अष्टाचत्वारिंशच्छतम्) एक सौ अड़तालीस है।

अर्थ–कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ १४८ हैं। अर्थात् पाँच, नौ, दो, अट्ठाईस, चार, तिरानवे, दो और पाँच भेद से एक सौ अड़तालीस हैं।

उत्तर अड़तालिस अधिक, एक सौ हैं विख्यात।
भ्रमण कराएँ जीव को, भव वन में हे भ्रात!।।४।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म उत्तर भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ज्ञानावरणादि त्रयस्यांतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः पराध्या (पराः?) स्थितिः।।५।।

अन्वयार्थ–(ज्ञानावरणादित्रयस्य) ज्ञानावरण आदि तीन (अंतराय च) और अंतराय की (पराध्या स्थितिः) उत्कृष्ट स्थिति (त्रिंशत्सागरोपमकोटी-कोट्यः) तीस कोड़ा कोड़ी सागर है।

अर्थ–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोड़ा-कोड़ी सागर की है।

त्रय ज्ञानावरणादि अरु, अन्तराय की तीस।
कोड़ा-कोड़ी स्थिति रही, कहते जैन ऋृशीष।।५।।

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

मोहनीयस्य सप्ततिः।।६।।

अन्वयार्थ–(मोहनीयस्य) मोहनीय कर्म की स्थिति (सप्ततिः) सत्तर कोड़ा-कोड़ी सागर है।

अर्थ–मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ा-कोड़ी सागर की है।

स्थिति मोहनीय कर्म की, सत्तर कोड़ा कोड़ि।
जान के मोहनीय कर्म से, अपना नाता तोड़ि।।६।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म स्थिति प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

त्रयस्-त्रिंश देवायुषः।।७।।

अन्वयार्थ–(त्रयस्त्रिंशत्) ३३ सागर (एव) (आयुषः) उत्कृष्ट आयु।

अर्थ–आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागर की है।

तैंतीस सागर आयु की, स्थिति है उत्कृष्ट।
अन्तर्मुहूर्त स्थिति रही, जघन्य शास्त्र उपदिष्ट।।७।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नामगोत्रयोर्-विंशतिः।।८।।

अन्वयार्थ–(नामगोत्रयोः नाम और गोत्र की (विंशतिः) २० कोड़ा-कोड़ी सागर है।

अर्थ–नाम और गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति २० कोड़ा कोड़ी सागर की है।

नाम गोत्र द्वय कर्म की, कोड़ा कोड़ी बीस।
स्थिति यह उत्कृष्ट है, कहते जैन ऋृशीष।।८।।

ॐ ह्रीं नामगोत्र कर्म प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा-**बन्ध के हेतु का तथा, लक्षण भेद प्रभेद।**
का वर्णन इसमें रहा, पूजें भक्त विशेष।।

ॐ ह्रीं बन्ध हेतु प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां अष्टमोध्याय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

अध्याय नवम्

दोहा–सम्बर निर्जरा तत्त्व द्वय, का किन्हा व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।९।।

।।नवमोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

गुप्त्यादिना संवरः।।१।।

अन्वयार्थ–(गुप्त्यादिना) गुप्ति आदि से (संवरः) संवर होता है।

अर्थ–गुप्ति आदि से संवर होता है। अर्थात् गुप्ति, समिति, धर्म, अनुपेक्षा, परिषहजय और चारित्र से कर्मास्रव का निरोध होता है यानि संवर होता है।

गुप्तयादि से जीव के, संवर हो यह जान।
कर्मास्रव का रोध हो, जिससे अतिशय वान।।१।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा हेतु लक्षण प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तपसा निर्जाराऽपि।।२।।

अन्वयार्थ–(तपसा) तप से (निर्जरा) निर्जरा (अपि) भी होती है।

अर्थ–तप से भी निर्जरा होती है अर्थात् संवर के साथ-साथ तप करने से निर्जरा भी होती है।

तप से होवे निर्जरा, संवर पूर्वक मान।
अनुक्रम से यह जीव फिर, प्राप्त करे निर्वाण।।२।।

ॐ ह्रीं निर्जरा हेतु स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उत्तमसंहननस्याऽन्तर्मुहूर्तावस्थायि ध्यानम्।।३।।

अन्वयार्थ–(उत्तमसंहननस्य) उत्तम संहनन वाले के (अन्तर्मुहूर्त) अन्तर

मुहूर्त (अवस्थायि) अवस्थित या एकाग्रता (ध्यानम्) ध्यान है।

अर्थ–उत्तम संहनन वाले के ध्यान अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त अवस्थित रहने वाला होता है। अर्थात् उत्तम संहनन वाले का एक विषय में चित्तवृत्ति का रोकना ध्यान है जो मात्र अन्तर्मुहूर्त तक ही होता है।

उत्तम संहनन धर कोई, हो एकाग्रता वान।
अन्तर्मुहूर्त उस जीव के, होवे उत्तम ध्यान।।३।।

ॐ ह्रीं ध्यान लक्षण स्वामि प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तच्चतुर्विधम्।।४।।

अन्वयार्थ–(तत्) वह ध्यान, (चतुर्विधम्) चार प्रकार का है।

अर्थ–वह ध्यान चार प्रकार का है–आर्त्त, रौद्र, धर्म, शुक्ल।

भेद चार हैं ध्यान के रहा शुभाशुभ ध्यान।
आर्त्त रौद्र हैं अशुभ दो, धर्म शुक्ल शुभ मान।।४।।

ॐ ह्रीं ध्यानस्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आद्ये संसारकारणे।।५।।

अन्वयार्थ–(आद्ये) आदि के (संसार) संसार के (कारणे) कारण हैं।

अर्थ–आर्त्त और रौद्र आदि के दो ध्यान संसार के कारण हैं।

हैं कारण संसार के, आदी के दो ध्यान।
तजें भाव से पूर्णतः, पाके सम्यक्ज्ञान।।५।।

ॐ ह्रीं ध्यान कारण स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

परे मोक्षस्य।।६।।

अन्वयार्थ–(परे) अंत के दो (मोक्षस्य) मोक्ष के कारण हैं।

अर्थ–शेष बचे दो ध्यान मोक्ष के कारण हैं। अर्थात् धर्म ध्यान और शुक्लध्यान मोक्ष के कारण हैं।

मोक्ष के कारण अन्त के, बतलाए भगवान।
तीन योग से ध्यान कर, पायें मोक्ष निदान।।६।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थ भेद प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पुलाकाद्याः पंच निर्ग्रन्थाः।।७।।

अन्वयार्थ–(पुलाकाद्याः) पुलाक आदि (पंच निर्ग्रन्थाः) पाँच प्रकार के मुनि होते हैं।

अर्थ–पुलाक आदि पाँच प्रकार के मुनिराज होते हैं अर्थात् पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ, स्नातक ये पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थ मुनि होते हैं।

पुलकादि निर्ग्रन्थ हैं, मुनिवर पंच प्रकार।
तपकर करते निर्जरा, पाते भव से पार।।७।।

ॐ ह्रीं पंच निर्ग्रन्थ साधू प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा-**सम्मर एवं निर्जरा, का पावन व्याख्यान।**
किया नवम अध्याय में, पाने शिव सोपान।।८।।

ॐ ह्रीं सम्मर निर्जरा स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नवमोध्याय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

दशम् अध्याय

दोहा–मोक्ष तत्त्व का है यहाँ, सुन्दरतम व्याख्यान।
पुष्पांजलिं करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।

।।दशमोऽध्याय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मोहक्षये घातित्रयापनोदात्-केवलम्।।१।।

अन्वयार्थ–(मोह क्षये) मोह के क्षय होने पर (घातित्रय) तीन घातिया (अपनोदात्) विनाश से (केवलम्) केवलज्ञान होता है।

अर्थ–मोहनीय कर्म का क्षय होने पर तीन घातिया कर्मों के (ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अंतराय) विनाश से केवलज्ञान होता है।

क्षय होते ही मोह के, घाती क्षय हों तीन।
प्रकट होय केवल्य तव, पावें ज्ञान प्रवीण।।१।।

ॐ ह्रीं केवल्य ज्ञान स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अशेष कर्मक्षये मोक्षः।।२।।

अन्वयार्थ–(अशेष) संपूर्ण (कर्मक्षये) कर्मक्षय होने पर (मोक्षः) मोक्ष होता है।

अर्थ–सब कर्मों के क्षय से मोक्ष होता है। अर्थात् ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के क्षय से मोक्ष होता है।

जीव कर्म क्षय कर सभी, पावें मोक्ष निवास।
कर्मों के क्षय से विशद, होय मोक्ष सुख खास।।२।।

ॐ ह्रीं मोक्ष स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ततः ऊर्ध्व गच्छत्याऽलोकान्तात्।।३।।

अन्वयार्थ–(ततः) बाद में (ऊर्ध्व) ऊपर (गच्छत्या) गमन कर (लोकान्तात्) लोक के अंत तक जाता है।

अर्थ–समस्त कर्मों के क्षय के बाद में जीव का गमन ऊर्ध्वलोक में, लोक के अंत तक होता है।

ऊर्ध्व गमन कर जीव फिर, जाय लोक पर्यन्त।
सिद्ध बने कर कर्म क्षय, तज के पद अर्हन्त।।३।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक पर्यन्त गमन स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

ततो न गमनं धर्मास्तिकायाऽभावात्।।४।।

अन्वयार्थ–(ततः) उससे आगे (ऊपर) (न) नहीं (गमनम्) गमन (धर्मास्तिकाय) धर्मास्तिकाय के (अभावात्) अभाव में।

अर्थ–लोक के अंतिम भाग के आगे सिद्धों का गमन नहीं है क्योंकि वहाँ धर्म द्रव्य का अभाव पाया जाता है।

उससे आगे न गमन, करता कोई जीव।
धर्मास्तिकाय अभाव से, ठहरे वहीं सुजीव।।४।।

ॐ ह्रीं धर्मास्तिकाय अभाव प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

क्षेत्रादिसिद्धभेदाः साध्याः।।५।।

अन्वयार्थ–(क्षेत्रादि) क्षेत्र आदि के द्वारा (सिद्ध) सिद्धों के (भेदाः) भेद (साध्याः) जानने योग्य हैं।

अर्थ–क्षेत्र आदि के द्वारा सिद्धों के भेद (साध्य) जानने योग्य हैं। क्षेत्र, काल, गति, लिंग, तीर्थ, चारित्र, प्रत्येक बुद्ध, बोधित बुद्ध, ज्ञान, अवगाहन, अन्तर, संख्या और अल्प बहुत्व इनके द्वारा सिद्ध जीव विभाग करने योग्य हैं।

क्षेत्रादिक के भेद से, सिद्धों में है भेद।
जानें ज्ञानी जीव यह, मन का तज के खेद।।५।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रादिभेद स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा-**विशद ज्ञान एवं रहा, मुक्ती का व्याख्यान।**
दशम् अध्याय में जीव सब, पढ़ें लगाकर ध्यान।।

ॐ ह्रीं मोक्ष स्वरूप प्ररूपक श्री तत्त्वार्थ सूत्राभ्यां दशमोध्याय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

●

श्री तत्त्वार्थ सूत्र चालीसा

दोहा- उमास्वामिकृत ग्रन्थ है, तत्त्वार्थ सूत्र महान्।
मोक्षमार्ग का है कथन, जिसमें महिमावान।।
भव्यजीव जो हैं विशद, पावें शिव सोपान।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

काल अनादि अनंत बताया, जिसका अंत कहीं न गाया।।१।।
जीव अनंत लोक में गाए, एकेंद्रिय आदिक कहलाए।।२।।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल बताए, परावर्त भव भाव कहाए।।३।।
भ्रमण करें होके अज्ञानी, तीन लोक में जग के प्राणी।।४।।
है सौराष्ट्र देश शुभकारी, ऊर्जयंतगिरि मंगलकारी।।५।।
नेमिनाथ जिन मुक्ती पाए, सिद्ध क्षेत्र पावन कहलाए।।६।।
निकट रहा पत्तनगिरि भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।७।।
सिद्धाख्या श्रेष्ठी था जानो, द्विज कुलीन श्रावक पहचानो।।८।।
भाव मुक्ति का जिसको आया, उसने तब इक सूत्र बनाया।।९।।
सम्यक् शब्द रहित या जानो, पटिए पर लिक्खा था मानो।।१०।।
आचार्य उमास्वामि जी गाए, कर विहार वे वहाँ पे आए।।११।।
सूत्र में सम्यक् शब्द लगाए, करुणा भाव हृदय में लाए।।१२।।
सूत्र में सम्यक् शब्द को पाया, सेठ ने सूत्र का अर्थ लगाया।।१३।।
भूल पे अपनी जो पछताया, मुनि दर्शन का भाव जगाया।।१४।।
वन में जाके दर्शन पाया, मुनि से सारा हाल बताया।।१५।।
गल्ती प्रथम सूत्र में भारी, लिखने में यह हुई हमारी।।१६।।
आगे हम कैसे लिख पाएँ, तुम चरणों में शीश झुकाएँ।।१७।।
मोक्षमार्ग का सार बताओ, हमको भव से पार लगाओ।।१८।।
गुरुवर तब उपदेश सुनाएँ, शिवपद दायी सूत्र रचाएँ।।१९।।

जीव तत्त्व का वर्णनकारी, प्रथम अध्याय रहा शुभकारी।।२०।।
उपशम आदिक भाव बताए, द्वितीय अध्याय में जो बतलाए।।२१।।
जीव का लक्षण भेद गिनाए, देह प्रदेश आदि बतलाए।।२२।।
अधो मध्य का वर्णनकारी, तृतिय अध्याय है मंगलकारी।।२३।।
चार प्रकार के देव बताए, चतुर्थ अध्याय में यह बतलाए।।२४।।
द्रव्य अजीव अन्य जो गाए, अध्याय पंचम में दिखलाए।।२५।।
पुद्गल द्रव्य मूर्त कहलाया, स्पर्शादिक गुण युत गाया।।२६।।
आस्त्रव तत्त्व शुभाशुभ गाया, छठे अध्याय में लक्षण पाया।।२७।।
अशुभाश्रव के हेतु बताए, बंध में कारण जो बतलाए।।२८।।
सप्तम में शुभ आस्त्रव जानो, शुभ व्याख्यान रहा यह मानो।।२९।।
बंध के हेतू जो कहलाए, अष्टम अध्याय में बतलाए।।३०।।
संवर और निर्जरा जानो, नवम अध्याय में व्याख्या मानो।।३१।।
चारित के भी भेद बताए, सूत्रों में लक्षण बतलाए।।३२।।
मोक्षतत्त्व की व्याख्याकारी, दशम अध्याय रहा मनहारी।।३३।।
मोक्षशास्त्र यह ग्रंथ कहाए, मुक्ती का सोपान बताए।।३४।।
सप्त तत्त्व का व्याख्याकारी, शास्त्र कहा है मंगलकारी।।३५।।
हेयाहेय का ज्ञान कराए, उपादेय में सुरुचि बढ़ाए।।३६।।
पावन सम्यक् ज्ञान जगाए, मन में जो संवेग जगाए।।३७।।
मोक्षमार्ग पर फिर बढ़ जाए, जिससे कर्म निर्जरा पाए।।३८।।
कर्म घातिया जीव नशाए, विशद ज्ञान प्राणी प्रगटाए।।३९।।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, ग्रन्थ गुरु पद शीश झुकाएँ।।४०।।

दोहा– शुभ भावों से जो पढ़े-चालीसा चालीस।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, बने श्री की ईश।।
सुख शांती सौभाग्य हो, पाके सम्यग्ज्ञान।
''विशद'' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें मोक्ष निधान।।

जाप्य- ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो नमः।

●

आरती तत्त्वार्थ सूत्र की

(तर्ज आज करें हम...)

आज करें तत्त्वार्थ सूत्र की, आरति सब नर-नार।
घृत के दीपक लेकर आए- २, जिनवर के दरबार।।
हे जिनवर! हम सब उतारें मंगल आरती।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकार मय प्यारी।
गणधर द्वारा गुँथित की है, जग में मंगलकारी।।
हे जिनवर....।।१।।
आचार्यों ने क्रमशः जिसका, मौखिक वर्णन कीन्हा।
पुष्पदंत अरु भूतबलि ने, लिपिबद्ध कर दीन्हा।।
हे जिनवर...।।२।।
उमास्वमी आचार्य ने अनुपम, रचना कीन्हीं भाई।
शुभ तत्त्वार्थ सूत्र यह मनहर, कृति सामने आई।।
हे जिनवर...।।३।।
सप्त तत्त्व छह द्रव्यों का, शुभ वर्णन जिसमें कीन्हा।
दश अध्याय के द्वारा अतिशय, मोक्षमार्ग शुभ दीन्हा।।
हे जिनवर...।।४।।
वह उपवास के फल को पाते, भाव सहित जो ध्यावें।
'विशद' भाव से पाठ करें अरु, आरति मंगल गावें।।
हे जिनवर...।।५।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागाराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् २५४९ पौष शुक्ल मासे विहार प्रान्ते गया नगरे २५४८-२५७६ सप्तमी रविवार वासरे तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भ्रूयात्।

●